

पंवार जाति का इतिहास

Publisher : Maa Tapti Shodh Sansthan, Multai.

Authors : राजेश बारंगे पंवार, Rajesh Bobde, Pranay Chopde, Vaibhav Pathe.

हिंदू वैदिक वर्ण व्यवस्था के अनुसार, क्षत्रिय पवार/पंवार जाति "क्षत्रिय" वर्ण के अंतर्गत आती है और यह जाति मालवा के अग्निवंशी क्षत्रिय पवार (परमार) राजवंश की वंशज है। वर्तमान में, क्षत्रिय पवार जाति तीन प्रमुख क्षेत्रों में स्थानांतरण के कारण तीन अलग-अलग समूहों में बंटी हुई है। ये समूह विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में फैलने के बाद भी अपनी पारंपरिक संस्कृति और सामाजिक पहचान को बनाए रखने में सफल रहे हैं:

1. भोयर पवार (72 कुल) - यह समूह मध्य प्रदेश के बैतूल, छिंदवाड़ा, पांडुर्ना, और महाराष्ट्र के वर्धा और नागपुर जिलों में बसा हुआ है।
2. मालवा पवार (52 कुल) - यह समूह मध्य प्रदेश के उज्जैन, सीहोर, शाजापुर, राजगढ़, और देवास जिलों में बसा हुआ है।
3. वैनगंगा पवार (36 कुल) - यह समूह मध्य प्रदेश के बालाघाट, सिवनी, मंडला, और महाराष्ट्र के भंडारा और गोंदिया जिलों में बसा हुआ है।

तीनों पवार समूह एक समान सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को अपनाए हुए हैं और एक जैसी जातिगत परंपराओं तथा धार्मिक मान्यताओं का पालन करते हैं। भले ही वे लंबे समय से मालवा और राजस्थान से निकलकर दूर-दूर के प्रदेशों में बस गए हैं, किंतु वे अपनी अलग पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने में सक्षम हुए हैं, क्योंकि वे सभी शुद्ध रक्त वाले क्षत्रिय (राजपूत) हैं। यह उनकी सांस्कृतिक एकता और ऐतिहासिक मूल्यों को दर्शाता है।

16वीं सदी तक, पवारों की सभी शाखाएँ मालवा में एक साथ निवास करती थीं, और उनके बीच आपसी विवाह सामान्य थे। हालांकि, 16वीं सदी से लेकर 18वीं सदी के बीच, 72 कुलों वाली शाखा ने बैतूल की ओर स्थानांतरित किया और धीरे-धीरे छिंदवाड़ा, पांडुर्णा, वर्धा, और नागपुर जिलों में फैल गई। उनकी प्रारंभिक बस्ती बैतूल के भंवरगढ़ किले (जिसे भोयरगढ़ किला भी कहा जाता है) पर थी, और इसके परिणामस्वरूप, स्थानीय लोगों ने उन्हें "भोयर पवार" कहना शुरू कर दिया, जिसका अर्थ है "वह पवार जो भंवरगढ़ किले में रहते हैं।" 17वीं सदी के अंत से लेकर 18वीं सदी की शुरुआत तक, स्थानांतरण का दूसरा चरण हुआ, जिसमें 36 कुलों वाली शाखा ने बालाघाट, सिवनी, मंडला, भंडारा, और गोंदिया जिलों की ओर स्थानांतरित किया। उन्होंने शुरुआत में नगरधन (रामटेक, जिला नागपुर) किले में बसना शुरू किया और वहां से वैनगंगा नदी के किनारे के क्षेत्र में जाकर बस गए, जिससे स्थानीय लोगों ने उन्हें "वैनगंगा पवार" का नाम दिया, जिसका अर्थ है "वह पवार जो वैनगंगा नदी के पास रहते हैं।" दोनों शाखाओं के स्थानांतरण को मालवा में मुगल शासन के तहत किए गए अत्याचारों एवं धर्म परिवर्तन के कुचक्र का परिणाम माना जाता है, जिससे उन्होंने मालवा से बाहर स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। 52 कुलों वाला समूह धार-उज्जैन क्षेत्र से पूर्व सिमावर्ती क्षेत्रीय मालवा पट्टी में स्थानांतरित हुआ और इस प्रकार "मालवा पवार" के नाम से जाना गया, जिसका अर्थ है "वह पवार जो मालवा में रहते हैं।"

मालवा के पंवार (परमार) वंश का अंत तब हुआ जब अलाउद्दीन खिलजी ने 1305 में इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की और मालवा को मुगल शासन के अधीन कर लिया। मुगलों ने इस क्षेत्र के हिंदुओं, जैनों, सिखों और बौद्धों पर अनेक अत्याचार किए। विशेष रूप से उन्होंने राजपूतों को निशाना बनाया, जो सदैव मुगल शासन का विरोध करते थे। राजपूत मालवा में मुगल शासन नहीं चाहते थे और मालवा को पुनः प्राप्त करने के लिए उन्होंने मुगलों से कई युद्ध लड़े। पंवार राजपूत मालवा में बड़ी संख्या में थे और मुगलों का विरोध करने के कारण उन्हें सबसे अधिक अत्याचारों का सामना करना पड़ा। कई वर्षों तक मालवा में पंवार राजपूतों ने मुगलों के अधीन अनेक अत्याचार सहे। उन्हें या तो मुगलों की सेवा में गुलाम बनने या इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर किया गया—और ये दोनों शर्तें पंवार राजपूतों के लिए अस्वीकार्य थीं। पंवारों ने लंबे समय तक मुगलों के अत्याचार झेले, लेकिन एक समय ऐसा आया जब उनके लिए इनसे बचने का कोई उपाय खोजना अत्यंत आवश्यक हो गया। 15वीं सदी के अंत में, सभी पंवारों ने अपने मूल उपनामों को बदलकर ऐसे सामान्य उपनाम रख लिए जो राजपूत उपनामों की तरह प्रतीत नहीं होते थे। उन्होंने यह मुगलों से अपनी राजपूत पहचान छिपाने के लिए किया, ताकि मुगल उन्हें पहचान न सकें और वे अत्याचारों से बच सकें। हालांकि, यह योजना

विफल रही और मुगलों ने उन्हें किसी न किसी तरह पहचान लिया तथा अत्याचार जारी रखे। यह पंवारों के लिए अस्वीकार्य था; उस समय पंवारों ने निर्णय लिया कि वे मालवा से पलायन करके किसी ऐसी जगह चले जाएंगे, जहां उन्हें मुगलों से मुक्ति मिले। इसलिए 16वीं सदी से 18वीं सदी के बीच, 72 कुलों वाले पवारों का समूह धीरे-धीरे धार से सीहोर होते हुए, फिर होशंगाबाद, और अंततः बैतूल की ओर स्थानांतरित होता गया। इस दौरान, वे होशंगाबाद जिले के एक गांव में कुछ समय के लिए अस्थायी रूप से बसे, जो बाद में वहां रहने वाले पवारों के कारण "पवारखेड़ा" के नाम से जाना जाने लगा। स्थानांतरित करते हुए, उन्होंने बैतूल जिले की उत्तरी सीमा के निकट एक अन्य गांव में कुछ समय के लिए अस्थायी रूप से बसने के बाद उसका नाम "धार" रखा, अपने मूल स्थान के नाम पर। अंततः, जब वे बैतूल पहुंचे, तब उन्होंने बैतूल जिले के भंवरगढ़ किले (जिसे भोयरगढ़ किला भी कहा जाता है) में कुछ महीनों तक बसेरा किया। इसके कारण, स्थानीय लोगों ने उन्हें "भोयर पवार" कहना शुरू कर दिया, जिसका अर्थ है "भंवरगढ़ किले में रहने वाले पवार।" "भोयर पवार" नाम स्थानीय लोगों द्वारा इन पवारों को दिया गया था। भंवरगढ़ किला क्षेत्र के गोंड राजा, बख्त बुलंद शाह द्वारा पवार राजपूतों को सौंपा गया था। आगे चलकर कुछ पवारों ने छिंदवाड़ा के देवगढ़ के तत्कालीन गोंड राजाओं (जैसे बख्त बुलंद शाह तथा चांद सुल्तान आदि) को सैनिकों और सैन्य सरदारों के रूप में सेवाएं दीं, जिसके परिणामस्वरूप गोंड राजाओं द्वारा पवारों को भूमि अनुदान दिया गया। मुलताई, पांडुर्णा, सौंसर, और कारंजा (घाड़गे) का भूमि अनुदान मुख्य और सबसे बड़ा था। इसलिए मुलताई, पांडुर्णा, सौंसर और कारंजा (घाड़गे) में पवारों की अच्छी संख्या बस गई, और आगे चलकर उनके आसपास के गांवों में भी पवार लोग बस गए। धीरे-धीरे, ये पवार लोग बैतूल, छिंदवाड़ा, पांडुर्णा, और वर्धा जिलों के कई गांवों में फैल गए और गोंड राजाओं द्वारा दी गई भूमि के कारण प्रमुख जमींदार/मालगुजार बन गए। उन्होंने खेती-किसानी भी शुरू की और अत्यधिक कुशल कृषक बन गए। शासकीय राजस्व में भारी वृद्धि हुई और उनकी संपत्ति बढ़ी; तथा विशाल मात्रा में भूमिधारक होने के कारण, मालगुजारी हक हासिल होने के कारण, स्थानीय लोग उन्हें "महाजन" या "पटेल" जैसी सम्मानित पदवियों से बुलाने लगे। मालवा से पलायन के बाद पवारों की सबसे पहली मुख्य बस्ती बैतूल जिले के मुलताई में बसी थी और वहां से वे धीरे-धीरे बैतूल जिले के अन्य आस-पास के गांवों में फैल गए। फिर कुछ समय बाद पवार लोग छिंदवाड़ा और पांडुर्णा जिलों में भी अच्छी संख्या में बस गए और अंत में पवारों के कुछ परिवारों ने वर्धा जिले के कारंजा (घाड़गे) में बस्तियां बसाईं और उसके आस-पास के गांवों में फैल गए। समय के साथ, पवार लोग बैतूल, छिंदवाड़ा, पांडुर्णा और वर्धा के साथ नागपुर जिले में भी थोड़ी संख्या में बस गए और उन्होंने खेती-किसानी को अपना मुख्य व्यवसाय बनाकर उसे जारी रखा। वे कृषि और भूमि स्वामित्व में उत्कृष्टता प्राप्त करते रहे और एक अत्यधिक सफल भूमि-स्वामी और कृषि समुदाय

बन गए। इस प्रकार, भोयर पवार (72 कुल) शाखा मध्य प्रदेश के बैतूल, छिंदवाड़ा, और पांडुरण जिलों में तथा महाराष्ट्र के वर्धा और नागपुर जिलों में बस गई।

17वीं सदी के अंत और 18वीं सदी की शुरुआत के बीच, ऐसा कहा जाता है कि देवगढ़ के गोंड राजाओं ने सैन्य सहायता की आवश्यकता महसूस की और इस उद्देश्य के लिए पश्चिमी मालवा से पंवारों की 36 कुलों वाली शाखा को आमंत्रित किया। जब गोंड राजाओं ने पंवारों को बुलाया, तो पंवारों ने मध्य प्रांतों की ओर स्थानांतरित होना शुरू कर दिया। गोंड राजाओं ने उन्हें पहले रामटेक के नगरधन किले में बसाया, जो नागपुर के पास स्थित है। इसके बाद, पवारों ने धीरे-धीरे मध्य प्रदेश के बालाघाट और सिवनी जिलों में और महाराष्ट्र के भंडारा और गोंदिया जिलों में फैलना शुरू किया। स्थानांतरण का मार्ग अभी भी विवादित है, लेकिन कुछ विद्वानों का सुझाव है कि ये पंवार पश्चिमी मालवा से बुंदेलखंड और बघेलखंड होते हुए नगरधन पहुंचे और नगरधन, अंबागढ़, रामपायली, सानगडी आदि किलों में निवास करने के बाद वैनगंगा नदी के आसपास के ग्रामों में बस गए। इस कारण पवारों की यह 36 कुल शाखा "वैनगंगा पवार" कहलाने लगी। इन्हें मराठी भाषी क्षेत्र में पोवार तथा हिंदी भाषी क्षेत्र में पवार नाम मिला। अंग्रेज़ लेखकों ने पोवार का पोंवार तथा पवार का पंवार अपभ्रंश कर डाला। इस पवार समूह की ओर से सैन्य सहायता प्रदान होने के कारण गोंड और मराठा राजाओं ने इन्हें बालाघाट, सिवनी, भंडारा, और गोंदिया जिलों में भूमि आवंटित की, जहां उन्होंने बसकर खेती और भूमि स्वामित्व शुरू किया। जैसे कि भोयर पवार (72 कुल), जिन्होंने वैनगंगा पवार (36 कुल) से पहले मध्य प्रांतों की ओर स्थानांतरण किया था, वैनगंगा पवार भी सफल भूमि मालिक और कृषक बन गए। दोनों समूहों को उनकी भूमि गोंड और मराठा राजाओं से प्राप्त हुई। यह भी कहा जाता है कि पवारों की 36 कुलों वाली शाखा के कुछ पवार सैनिकों ने कटक की लड़ाई (1750 ईस्वी) में भोसले शासकों की मदद की, जिसके बाद उन्हें भोसले शासकों द्वारा ग्राम उपहार के रूप में दिए गए। इससे उनकी प्रमुख जमींदार और कृषक बनने की स्थिति और मजबूत हो गई। इस प्रकार, वैनगंगा पवार (36 कुल) शाखा मध्य प्रदेश के बालाघाट, सिवनी, और मंडला जिलों में तथा महाराष्ट्र के भंडारा और गोंदिया जिलों में बस गई।

जब 72 कुल और 36 कुल समूह मालवा से पलायन कर गए, तो 52 कुलीन पवार मुसलमानों के अत्याचारों से तंग होकर मध्य से पूर्व सीमा क्षेत्र (तत्कालीन पूर्वी मालवा) के घने जंगली क्षेत्र में स्थानांतरित हुए। वे धार से शाजापुर में पहुंचे और फिर वहां से उज्जैन, सीहोर, राजगढ़, और देवास जिलों में फैल गए। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, तीनों शाखाओं के पवार—72 कुल, 52 कुल, और 36 कुल—ने अपने मूल कुल नामों को बदलकर अधिक सामान्य उपनाम रख लिए थे, जो राजपूत उपनामों की तरह नहीं लगते थे। इस

प्रकार, मुगल 52 कुल पवारों को मालवा में पहचानने में असमर्थ रहे, जिससे वे सफलतापूर्वक अपनी पहचान छिपा सके और मालवा में बने रहे। 52 कुल पवारों का समूह पवारों के तीनों समूहों में से एकमात्र सफल समूह था जो मालवा में मुगलों से अपनी पहचान छिपाकर सुरक्षित बना रहा, जबकि 72 कुल और 36 कुल शाखा के पवार मालवा छोड़कर दूसरी जगह स्थानांतरित हो चुके थे। इस प्रकार, मालवा पवार (52 कुल) शाखा मध्य प्रदेश के उज्जैन, सीहोर, शाजापुर, राजगढ़, और देवास जिलों में ही बनी रही।

मालवा के पवार राजस्थानी मालवी भाषा बोलते हैं, जबकि भोयर पवार और वैनगंगा पवार भी, वर्षों के स्थानांतरण के बावजूद, राजस्थानी मालवी बोली ही बोलते हैं; हालाँकि, उनकी मालवी में कुछ हद तक बघेली और बुंदेली बोलियों का मिश्रण भी पाया जाता है, जो स्थानीय बोलियों से घुल-मिलकर एक नए रूप में अवतरित हुई है और इसे पवारी/भोयरी या पोवारी कहा जाता है। भोयर पवारों द्वारा बोली जाने वाली पवारी/भोयरी पर उनके प्रवास के कारण बुंदेली और हिंदी भाषा का कुछ प्रभाव है, लेकिन यह मुख्य रूप से मालवी ही है। इसी प्रकार, वैनगंगा पवारों द्वारा बोली जाने वाली पवारी/पोवारी में थोड़ा मराठी और बघेली का प्रभाव है, लेकिन यह न्यूनतम होने के बावजूद काफी हद तक मालवी ही है। इसलिए, तीनों पवार समूह - मालवा पवार, भोयर पवार, और वैनगंगा पवार लोग मालवी से अवतरित बोलियाँ बोलते हैं। भोयर पवार और वैनगंगा पवार की भाषाओं में क्रमशः थोड़ा बुंदेली और बघेली प्रभाव देखा जा सकता है; फिर भी, तीनों शाखाओं की मूल भाषा एक समान बनी हुई है। इतिहास पर नजर डालने पर ज्ञात होता है कि परमार काल में बुंदेलखंड तथा बघेलखंड मालवा के ही अभिन्न अंग थे। यह दर्शाता है कि उनका सांस्कृतिक विकास और भाषा संबंधी परिवर्तन एक लंबी ऐतिहासिक यात्रा का परिणाम है। पवार लोग आपस में पवारी/भोयरी या पोवारी में बात करते हैं, जबकि बाहर के लोगों से हिंदी या मराठी में बात करते हैं। मध्य प्रदेश में हिंदी भाषा ज्यादा बोली जाती है, वहीं महाराष्ट्र में मराठी ज्यादा बोली जाती है।

पवारों की तीनों शाखाएँ—72 कुल, 52 कुल, और 36 कुल—अपने वंश और अपने क्षत्रिय रक्त की शुद्धता पर गर्व करती हैं, क्योंकि पवार उन कुछ जातियों में से हैं जिन्होंने वर्षों से अपने मूल क्षत्रिय (राजपूत) रक्त की शुद्धता बनाए रखी है। पवार जाति के लोग "राजा भोज पंवार," "राजा विक्रमादित्य पंवार," "राजा जगदेव पंवार," और पंवार वंश के अन्य राजाओं को अपने आदर्श राजा मानते हैं और उनकी परंपराओं का अनुसरण करते हैं। कई वर्षों के पलायन के बाद भी, तीनों समूहों के पवारों में बोली, रीतियों, परंपराओं, और धार्मिक अनुष्ठानों में कई समानताएँ हैं। तीनों समुदाय अपनी कुलदेवी धार की मां गढ़कालिका और कुलदेवता महादेव की पूजा करते हैं। तीनों समूह के पवारजन अब

मुख्यतः कृषि और भूमि स्वामित्व में संलग्न हैं। वे अच्छे जमींदार और कृषक के रूप में पहचाने जाते हैं। पवारों का इतिहास दर्शाता है कि वे कैसे बिखरे और मुगल शासन के तहत अत्याचारों के कारण विभिन्न क्षेत्रों में प्रवासित हुए। यह इतिहास दिखाता है कि उन्होंने मालवा में किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना किया और कैसे उन्होंने अन्य लोगों और मुगलों से अपनी पहचान छुपाई ताकि और अधिक अत्याचारों से बच सकें।

पवार, पंवार, परमार, भोयर, भोयर-पवार, और पोवार ये सभी एक ही क्षत्रिय पवार जाति के पर्यायवाची शब्द हैं। ये विभिन्न नाम पवारों की तीन शाखाओं—72 कुल, 52 कुल, और 36 कुल—द्वारा बदलती परिस्थितियों और प्रवास, पुनर्वास क्षेत्र की भाषाओं के प्रभाव के कारण उत्पन्न हुए हैं। विभिन्न नामों के बावजूद, ये सभी एक ही क्षत्रिय पवार जाति को संदर्भित करते हैं।

पवारों के कुल (72, 52, 36):

भोयर पवार / भोयर / पवार (72 कुल)

बारंगे, बागवान / भोयर, बैंगने, बरखेडे / बरखाडे, बारबुहारे, बडनगरे / बन्नगरे, भादे, भोभाट, बोबडे, बुवाडे, बिरगड़े / बिसेन, चोपड़े / चोपड़ा, चौधरी, चिकाने, डंडारे, डाला / डहारे, देवासे, देशमुख, धारपुरे / धारे, घोटे, ढोंडी, ढोबले, ढोले, डिगरसे / डिग्रेस, डोंगरदिए / डोंगरे, दुखी / दुर्वे, फरकाड़े, गाखरे, गाडगे, गडरे / काटोले, घागरे, गिरहारे, गोंदिया, गोहिते, गोरे, हजारे, हिंगवे, कालभोर / कालभूत, करदाते, कड़वे, कामड़ी, कासलीकर / कसाई, खौसी / कौशिक, खपरिया, खरगोसिया / खारफुसे, किरंजकर, किनकर, कोडले, लबड़े, लावरी, लाडके, लोखंडे, माटे, मानमोड़े, मुन्ने, नाडीतोड़, पठाडे, परिहार / पराड़कर, पाठे / पाठेकर, पिंजारे, रावत / राऊत, रबडे, रमधम, रोडल, सरोदे, सवाई, शेरके, ठवरी, ठुस्सी, टोपले, ओमकार, उकड़ले।

मालवा पवार / परमार / पंवार (52 कुल)

आजंनगया, बालोदिया, बामनिया, बनोरिया, बरोडिया, भवानिया, बिजानिया, छछेरिया, चावडीया, डडालिया, देष्टीया, देवड़ाया, देवलिया, धामनिया, धनानिया, धरोलिया, धूंधानिया, धसुरिया, गिलानिया, हडोटिया, हनोटिया, जामनिया, जउनिया, जलोदिया, केवलिया, खिचिया, खरुपनिया, खटुपालिया, कारिया, कुसमारिया, कुहेडिया, लखेरिया, मकवान्या, मउड़िया, मोजिया, पगारिया, पडानिया, पडोसनिया, परिहारिया, पिपलिया, पिपलोदिया, राजोदिया, रोजड़िया, साकलिया, सिलोटिया, सिलतारिया, सिंघानिया, सिसोदिया, सोनगरिया, सलुतानिया, टिकोनिया, उमरसिंग्या।

वैनगंगा पवार / पोवार (36 कुल)

अंबुले, बघेल / बघेले, भगत, भैरम, भोयर, बिसेन, बोपचे, चौहान, चौधरी, डाला, फरीद, गौतम, हनवत, हरिणखेड़े, जैतवार, कटरे / शेंडे, कोल्हे, क्षीरसागर, परिहार, पारधी / पारधे, पटले / पटेल / वडासकर, पुंड, राहंगडाले, राजहंस, रणदीवे, राणा, रावत, रहमत, रिनायत, सहारे, शरणागत, सोनवाने, टेंभरे, ठाकुर / ठाकरे, तुर्क / तुरकर, एडे / येडे।

Publisher : Maa Tapti Shodh Sansthan, Multai.

Authors : Rajesh Barange, Rajesh Bobde, Pranay Chopde, Vaibhav Pathe.